ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS: प्राणेशाचार्य, नारणप्पा, चंद्री, अंतिम-क्रिया,संघर्ष।

प्राणेशाचार्य की संघर्ष-गाथा : संस्कार

डॉ.उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला-वलसाड-३९६०५० (गुजरात)

ABSTRACT

उद्विपी राजगोपालाचार्य अनंतमूर्ति (21 दिसंबर,1932- 22,अगस्त 2014) आधुनिक कन्नड़ साहित्य के चितेरे एवम् भारत के एक प्रतिनिधि लेखक हैं। उनकी रचनाओं के अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं एवम् अनेक विदेशी भाषाओं में भी प्रचुर मात्रा में हुए हैं। उनकी अनेक रचनाओं पर बहुचर्चित फिल्में बनी हैं, नाट्य प्रस्तुतियाँ खेली गई हैं। 'संस्कार' की रचना लेखक ने इंग्लैंड में बैठकर की थी। लेखक का यह प्रथम उपन्यास है जिस पर से फिल्म भी बनी है। इसकी कला आकर्षक है। इसमें संभोग की घटना प्रमुख है। ज्ञान पद के नीचे दबे प्राणेशाचार्य के स्व-दर्शन की कथा है यह। जो दोहरे मानदंड लेकर जीता है। जिसकी मुक्ति नारणप्पा बनने में है। प्राणेशाचार्य इसमें प्रतिनिधि पात्र के रूप में उभरते हैं।

'संस्कार' यू.आर.अनंतमूर्ति द्वारा 1965 में कन्नड़ में रचित एक युगांतकारी उपन्यास है। यह तीन भागों में विभाजित है। इसका प्रमुख पात्र है- प्राणेशाचार्य। उसकी पत्नी का नाम है-भागीरथी। नारणप्पा शिवमोग्गा से प्लेग की महामारी अग्रहार लाया था जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। अब प्रश्न यह है कि उसके अंतिम संस्कार कौन करेगा। नारणप्पा ब्राह्मण समाज के किसी भी नीति-नियमों को नहीं मानता था। क्योंकि यह जाति से ब्राह्मण है, संस्कार से नहीं। और जहाँ तक अंतिम संस्कार नहीं होगा सभी को भूखों रहना पड़ेगा। नारणप्पा के अंतिम संस्कार के लिए चंद्री अपने सारे गहने ब्राह्मण समाज के सामने रख देती है तो गरूडाचार्य एवम् लक्ष्मणाचार्य की गहनों की लालसा सामने आ जाती है।

नारणप्पा नास्तिक था, मांसाहारी था, शराबी था, चंद्री से उसके संबंध हैं। वह मुसलमानों को अपने घर बुलाता था। अन्य ब्राह्मणों धमकी देता था। वह संगीत और नाट्य-प्रेमी था। किन्तु है तो वह ब्राह्मण ही है।

प्राणेशाचार्य दुर्वासापुर के कुछ ब्राह्मणों को पारिजातपुर भेजते हैं क्योंकि वे थोड़े निम्न कक्षा के ब्राह्मण हैं। वे नारणप्पा के अंतिम संस्कार करने के लिए बिनती करते हैं तो वे तैयार हो जाते हैं। प्राणेशाचार्य को याद आता है कि नारणप्पा की माँ ने उसको अपने बेटे को समझाने के लिए कहा था तो वे नारणप्पा के यहाँ गए थे। तब वह प्राणेशाचार्य से कहता है- 1."हम जो कर्म करते हैं, उसका फल ठीक विपरीत प्राप्त होता है।"[१] 2."वेद-पुराण पढो, किंतु उनका अर्थ समझने का प्रयत्न मत करो।"[२] 3."मैं आप ब्राह्मणों को यदि कोई सलाह दे सकता हूँ आचार्यजी, तो पहले आप लोग अपने तन और मन से रुग्णा पत्नियों को नदी में धकेल दीजिये। अपने पुराणों के ऋषियों की तरह जीना सीखिये। मछली की स्वादिष्ट तरी बनाने वाली किसी मत्स्यगंधा-सी मछुआरिन को अपनाइये और उसकी बाँहों में लिपटकर सोइये। आँख खुलने पर यदि आपको परमात्मा न दिखाई दे तो मेरा नाम नारणप्पा नहीं।"[३]- सुनकर उसे बड़ी पीड़ा होती है।

श्रीपति और नारणप्पा प्रगाढ़ मित्र थे। श्रीपति लक्ष्मणाचार्य का दामाद है। जिसे नारणप्पा ने उकसाया था। उसकी शादी हो गई है । किन्तु उसकी सास ने उसकी बेटी से कहा था कि अपने पति को संभोग न करने देना, अतः पत्नी से संभोग न कर पाने पर वह बेल्ली को भोगता है। बेल्ली किसी की मृत्यु की बात करती है तो वह सोचता है- "मैं काम-लिप्सा की उतावली में आया और यह किसी की मौत की बात करती है।"[४] उसके मतानुसार तो बेल्ली केवल साथ सोने के लिए ही ठीक थी, बातें करने के लिए नहीं।"[५] श्रीपति एक दिन नारणप्पा को मिलने के लिए उसके घर जाता है किन्तु वहाँ उसकी लाश को देखकर पारिजातपुर की ओर भाग जाता है।

नारणप्पा के ब्राह्मणों के बारे विचार भी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं-1."बांझ दृष्टि को भोजन ही नजर आता है।"[६]- 2."नीरस ब्राह्मणों के लिए मंत्र धंधा कमाने का एक रास्ता मात्र है।"[७]3. "अग्रहार में सौंदर्य परखनेवाले केवल दो ही आदमी है- नारणप्पा और श्रीपति। प्राणेशाचार्य सबसे अधिक रसिक हैं।"[८]

संशय की स्थिति में आचार्य चंद्री को गहने वापस दे देते हैं। ब्राह्मणों को- दासाचार्य, वेंकटरमण, श्रीनिवास, गुंडाचार्य, हनुमानाचार्य, लक्ष्मणाचार्य, गरूडाचार्य, दुर्गाभट्ट को भूख के कारण नींद नहीं आती। एक दिन दासाचार्य मंजय्या के यहाँ जाते हैं। तब उसके घर में लोग खाना खा रहे हैं । आग्रह करने पर वे वहाँ खाना खा लेते हैं।

अग्रहार में गिद्ध मँडराने लगते हैं, लोग आतंकित हैं। अंतिम संस्कार के बारे में अभी तक कोई निर्णय नहीं हो पाया है तब प्रणेशाचार्य अंतिम संस्कार के समाधान के लिए हनुमान मंदिर जाते हैं। हनुमान की मूर्ति पर वे फूल चढ़ाते हैं। शाम हो जाती है किन्तु हनुमान द्वारा कोई संकेत न मिलने से वे निराश हो जाते हैं। उन्हें पत्नी को दवा पिलाना याद आता है। एक और से आचार्य तो दूसरी और से चंद्री नदी में नहाकर केले लेकर आती है। संवेदना में चंद्री आचार्य के पैरों में लिपट जाती है तो वे उससे संभोग कर बैठते हैं।

चंद्री से संभोग की, पाप स्वीकारने की बात के लिए वे तैयार हैं किन्तु चंद्री नहीं आती। परिणाम स्वरूप संघर्ष का अनुभव करते हैं। तो दूसरी और चंद्री, अहमद बारी की सहायता से नारणप्पा के अंतिम संस्कार करवा देती है और बाद में कुन्दापुर निकल जाती है। इसकी जानकारी किसी को भी नहीं होती।

प्राणेशचार्य संघर्ष से घिर जाते हैं। "वे संभोग की कल्पना करते हैं। छोटी जाति की लड़कियों को निरावरण करने और अंग-प्रत्यंग देखने की वे कल्पना करते हैं। बेल्ली के स्तनों से खेलने के लिए उनके हाथ खुजलाने लगते हैं।"[९] वे चंद्री से किए गये संभोग-स्थल पर जाते हैं क्योंकि वहाँ उनके जीवन ने एक नया मोड़ लिया था। प्राणेशाचार्य द्वारा कोई निर्णय न कर पाने पर अग्रहार के ब्राह्मण कैमर मठ के स्वामी से मिलने जाने का निर्णय करते हैं। वे जो भी निर्णय करेंगे उसके अनुसार नारणप्पा के अंतिम संस्कार किए जायेंगे। और वहाँ खाना भी मिलेगा। कैमर मठ में खाना खाकर दासाचार्य और पद्मनाभाचार्य बीमार पड़ जाते हैं। बाद में दासाचार्य की मृत्यु हो जाती है।

दूसरी और दुर्वासापुर में प्राणेशाचार्य की पत्नी भागीरथी की प्लेग से मृत्यु हो जाती है। तब आचार्य को लगता है कि यह उनके "जीवन की तपस्या"[१०] की मृत्यु है। पत्नी के अंतिम संस्कार कर प्राणेशाचार्य घर छोड़कर पूर्व की ओर निकल पड़ते हैं। दूसरी और कैमर जो ब्राह्मण गए थे वे कैमर के स्वामी से पूछते हैं तो वे नारणप्पा के दाह संस्कार की मंजूरी तो देते हैं किन्तु यह भी कहते हैं कि नारणप्पा की सारी संपत्ति मठ को समर्पित करनी पड़ेगी।

पूर्व की ओर जाते समय एक चरवाहे से आचार्य की मुलाकात होती है। उसका नाम है-पुट्ट। उसके साथ चलते-चलते आचार्य के भीतर संघर्ष- भी चलता रहता है। वे सोचते हैं-अपने अंतर के भेद को दूसरे से कैसे बचा पाऊंगा। मेरी गोद में गाँठ बाँध कर एक झूठ पड़ा है। "चंद्री से संभोग करने का दायित्व मुझ पर नहीं- मैं उसके लिए जिम्मेवार कतई नहीं।"[११] चंद्री को एक बार फिर आलिंगन में बाँधने की कामना करते हैं। फिर सोचते हैं- मेरे हाथ उतावली में "चंद्री की छातियों और जाँघों को तलाश रहे थे-उस उतावली में मैंने धर्म को भी नहीं तलाशा था।"[१२] आचार्य दो सत्यों के बीच त्रिशंकु की तरह लटक जाते हैं। वे सोचते हैं कि "सारी तपस्या का एक स्त्री के कारण भंग हो गई।"[१३]

उन्हें अपने मित्र महाबल की याद आती है जिसे मिलने पर वह आचार्य को एक वेश्या के पास ले जाता है, जिसके साथ वह रहता था। तब आचार्य महाबल और नारणप्पा की तुलना करते हैं। वे नारणप्पा में महाबल को देखते हैं। उन्होंने तो पराजय को विजय में परिवर्तित करने की कामना की थी। किन्तु उन्हें प्रतीत होता

है कि मैं "नारणप्पा बन गया हूँ। मैं जिसका विरोध करता रहा, मैं वही बन गया हूँ।"[१४]

वे सोचते हैं कि "चंद्रीवाली उस एक घटना ने मुझे ब्राह्मणों से, पत्नी के अस्तित्व से, मौलिक आस्था से दूर कर दिया।"[१५] "सारी चिंता का एकमात्र कारण-जैसे स्वप्न में चंद्री के साथ मेरा सोना है"[१६] अतः वे सोचते हैं- "मैं बस पकड़कर कुन्दापुर जाऊँगा और वहाँ चंद्री के साथ रहूँगा-मैं अपना नव-निर्माण करूँगा।"[१७]

पुट्ट के कहने पर आचार्य मेलिगे के उत्सव में जाते हैं किन्तु यह भी सोचते हैं कि वहाँ कोई पहचान लेगा तो ? मेलिगे के मंदिर में जाकर गरम और नरम चावल और रसम खाने को आचार्य उत्कंठित हो उठते हैं। वहाँ वे सारी घटनाओं को याद करते हैं। और सोचते हैं कि अभी, इसी क्षण निर्णय लेना होगा। भोजन करने जाते समय उनके मन में संघर्ष चलता रहता है कि "शोक और सूतक के दूषित समय में भोज करने से मुझे भयंकर कलंक लगेगा।"[१८] किन्तु वहाँ वे झूठ बोलते हैं। वे सोचते हैं कि "मेरा जीवन सबके लिए अनावृत होकर रह गया है।"[१९] "मैं कुल ब्राह्मणत्व को त्यागकर अलग से खड़ा नहीं हो जाता तब तक इन उलझनों से स्वतंत्र नहीं हो पाऊँगा।"[२०]

पारिजातपुर के मंजय्या को मृत्यु के कारण का पता चलता है तो महामारी की खबर के कारण टीका लगवाने के लिए मेले में प्रचार होता है। आचार्य मेलिगे जाते हैं। वहाँ कुन्दापुर के भाड़े के लिए अंगूठी बेचते हैं, कॉफी पीते हैं, मुर्गों की लड़ाई देखते हैं,पद्मावती प्रति कामुक हो उठते हैं और शोक और सूतक की दशा में मंदिर में जाकर सहभोज करते हैं और पुट्ट से भी भोजन करने का आग्रह करते हैं। संघर्ष की स्थिति में वे निर्णय करते हैं कि "मुझे तुरंत ही दुर्वासापुर लौटकर जाना है।"[२१] उनके मन में पुट्ट को सारी बात बताने की इच्छा है। और वे गाड़ी में चढ़ जाते हैं। सफर के चार-पाँच घंटे ही बाकी हैं, फिर उसके बाद ?

क्या आचार्य ने दुर्वासापुर जाकर सारे सच कह दिए होंगे! जो प्राणेशाचार्य चंद्री से संभोग की घटना के बाद उससे कहता है कि कल सबेरे आकर लोगों से ये सारी बातें रख देना। उस आचार्य ने अवश्य दुर्वासापुर जाकर ये सारी बातें कह दी होगी। वी.एस.नायपाल का यह कथन उचित ही है कि संस्कार "takes us closer to the Indian idea of the self."[२२] उपन्यासकार ने इस उपन्यास का अंत खुला छोड़ दिया है। इस उपन्यास में किसी मृत व्यक्ति के अंतिम संस्कार की बात नहीं है, बात है जो रूढ़ संस्कार हैं उसे तिलांजलि देने की, उसके अंतिम संस्कार करने की बात है। Melissa Beck (Asymptote Journal) के मतानुसार- "U.R. Ananthamurthy,.. tries to teach Indian society a lesson in this story about the trouble with prioritizing tradition over compassion." [२३] उपन्यास के रैपर पर उचित ही अंकित किया गया है कि "अंतिम संस्कार ही नहीं, रूढ़ संस्कारों को तिलांजलि देता उपन्यास है संस्कार।" एम.ए. ऑर्थोफर ने उचित ही कहा है- "'Samskara is an effective tale of a community choked by unsustainable tradition. Ananthamurthy offers fine portraits of a variety of characters as they struggle between natural urges and societal expectations, and has crafted an impressive story here."२४

निष्कर्षः दुर्वासापुर जाकर आचार्य ने क्या किया होगा मन के भीतर के संघर्ष को, जो पाप उन्होंने किया था वह क्या उन्होंने दुर्वासापुर के लोगों को कह दिया होगा! संभोग की घटना मुख्य है। कारण कि ज्ञान के बोज के नीचे दबे हुए प्राणेशाचार्य, जिनका बड़ा मान-सम्मान है, चंद्री के साथ की घटना के बाद वे स्वयं अपना दर्शन करते हैं, स्वंय को जानते हैं। क्या प्राणेशाचार्य की मुक्ति नारणप्पा बनने में हैं? क्या आचार्य और नारणप्पा में कोई भेद है या नहीं? सही कौन है? आचार्य या नारणप्पा? जिस नारणप्पा को समझाने की कोशिश आचार्य ने कि थी आज वे स्वंय वही कर बैठे हैं। ये जो संस्कार है वह किसका है, नारणप्पा का है कि ब्राह्मण समाज के भीतर संस्कार के नाम पर ढोंग, दिखावापन, आडंबर आदि जो चल रहा है, उसकी बात है। उपन्यास की सारी कहानी आचार्य के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। इसका नायक नारणप्पा है क्योंकि आचार्य की पहचान भी नारणप्पा बनने में हैं। प्रत्यक्ष में रूढ़ धर्म की आलोचना करती यह कथा वास्तव में आत्म-बोध- ईश्वर से वेश्या तक की आचार्य की संघर्ष-गाथा है।

संदर्भ-संकेतः

[१] अनंतमूर्ति, यू.आर,, राधाकृष्ण प्रकाशन., नई दिल्ली, 2013, पृ.35
[२] वही.
[३] वही.पृ.36
[४] वही.पृ.51
[५] वही.
[६] वही.पृ.49
[७] वही.
[८] वही.
[९] वही.पृ.99
[१०] वही.पृ.104
[११] वही.पृ.117
[१२] वही.पृ.118
[१३] वही.पृ.109
[१४] वही.पृ.122
[१५] वही.पृ.133
[१६] वही.पृ.134
[१७] वही.
[१८] वही.पृ.158
[१९] वही.पृ.161
[२०] वही.
[२१] वही.पृ.167